चमकती चपला न, फेरत फिरगैं भट,
इन्द्र को न चाप, रूप बैरष समाज को।
धाए धुरवा न, छाए धूरि के पटल, मेघ
गाजिबो न, बाजिबो है दुन्दुभि दराज को॥
भौंहिला कै डरन डरानी रिपुरानी कहैं,
पिय भजौ, देखि उदौ पावस के साज को।
घन की घटा न, गज-घटनि सनाह साज,
भूषन भनत आयो सेन सिवराज को॥८१॥

शब्दार्थ—फिरंगैं = विलायती तलवार। बैरष = झंडा। धुरवा = बादल। पटल = तह। दराज = बड़े। पावस = वर्षा। सनाह = कवच।

अर्थ—भूषण कवि कहते हैं कि शिवाजी के भय से डरी हुई शत्रुओं की स्त्रियाँ वर्षा के साज (वर्षा होने के लक्षणों) को देखकर अपने पतियों से कहती हैं कि यह चपला (बिजली) नहीं चमकती है, ये शूरवीरों की विलायती तलवारें हैं। यह इन्द्र-धनुष नहीं है, यह सेना के झंडों का समूह है। ये आकाश में बादल नहीं दौड़ रहे हैं, वरन् धूल की तह की तह उड़ रही है (जो सेना के चलने पर उड़ती है)। न यह बादलों की गर्जना है, यह तो ज़ोर ज़ोर से नगाड़ों का बजना है। न यह मेघों की घटा है, यह तो हाथियों के झुंड और कवचों से सुसज्जित होकर शिवाजी की सेना आ रही है। अतः प्यारे! आप भागिए, नहीं तो खैर नहीं है।

विवरण—यहाँ बिजली की चमक, इन्द्र-धनुष, बादल, मेघ-गर्जन और घटाओं को छिपाकर उनके स्थान में तलवारों, झंडों, धूल की तह, दुन्दुभि-ध्वनि, हाथियों और कवचों से युक्त शिवाजी की सेना आदि

असत्य बातों का आरोप किया गया है, अतः अपह्नुति अलंकार है।